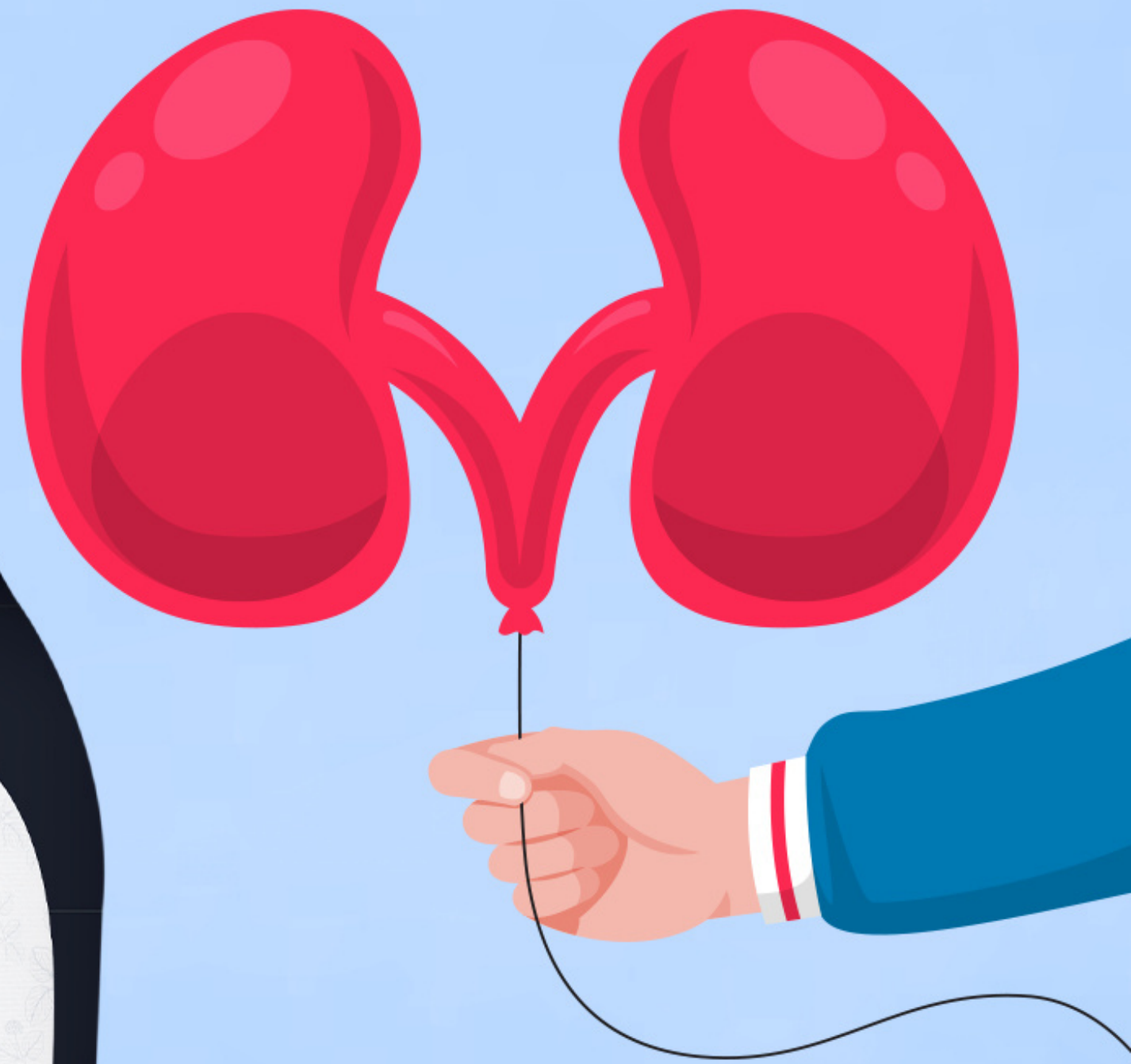
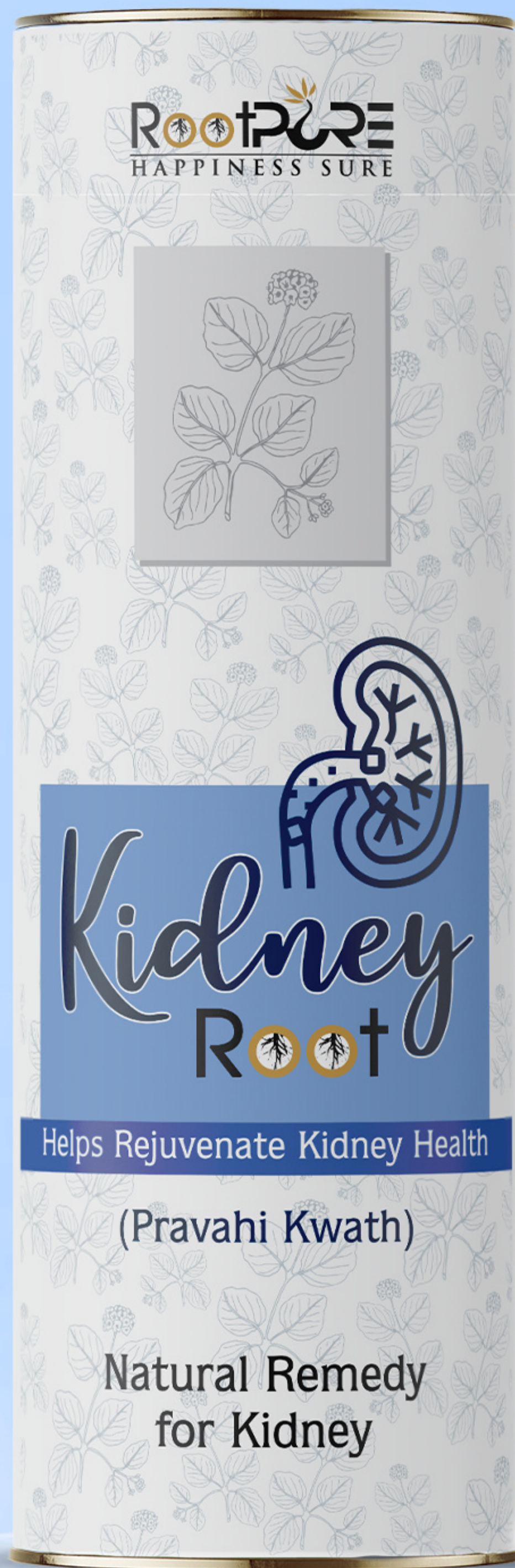
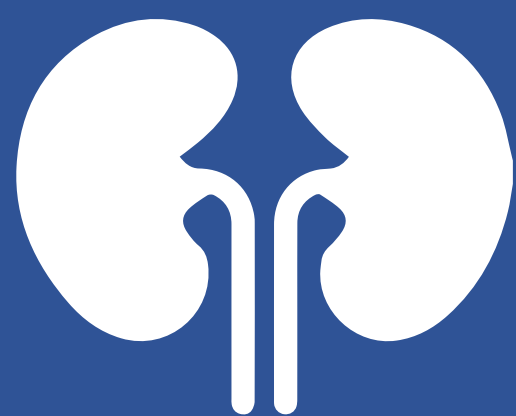
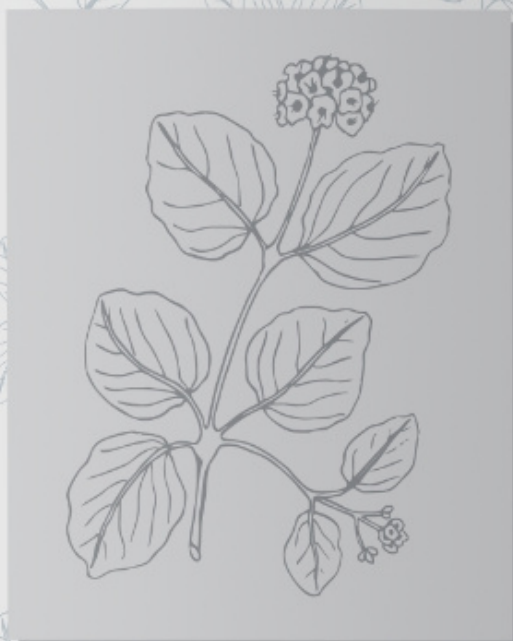






पथरी

RootPURE
HAPPINESS SURE

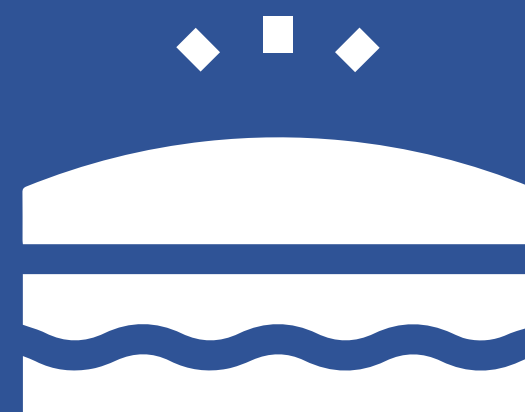


Kidney
Root

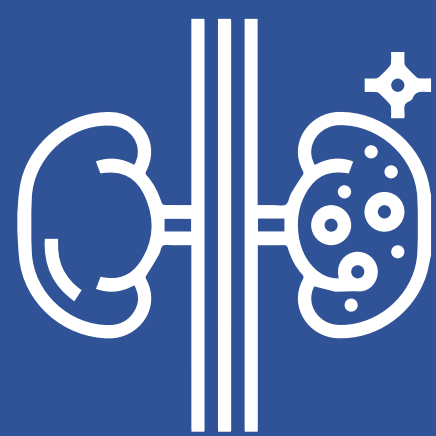
Helps Rejuvenate Kidney Health

(Pravahi Kwath)

Natural Remedy
for Kidney



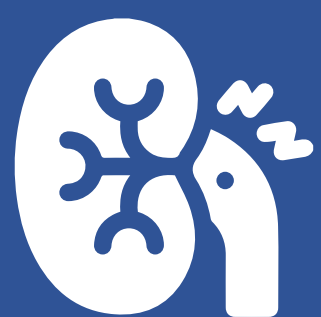
सूजन



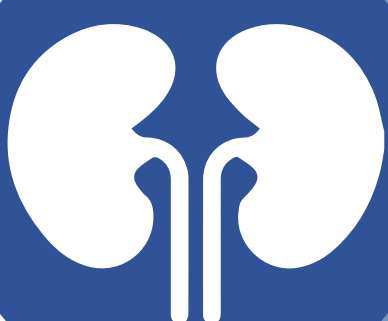
समग्र किडनी स्वास्थ्य
और विषहरण



दीर्घकालिक वृक्क रोग
(सी.के.डी.) प्रबंधन



पथरी – पाषाणभेद: ऐसा माना जाता है कि इसमें मूत्रवर्धक गुण होते हैं जो गुर्दे की पथरी के निर्माण को रोकने और मूत्र पथरी के उन्मूलन को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं। गोखरु अपने मूत्रवर्धक और सूजन रोधी गुणों के लिए जाना जाता है।



किडनी की कार्यप्रणाली और सामान्य स्वास्थ्य- पुनर्नवा: पारंपरिक रूप से अपने मूत्रवर्धक गुणों के लिए उपयोग किया जाता है, पुनर्नवा अतिरिक्त तरल पदार्थ और अपशिष्ट उत्पादों को हटाने को बढ़ावा देकर किडनी की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

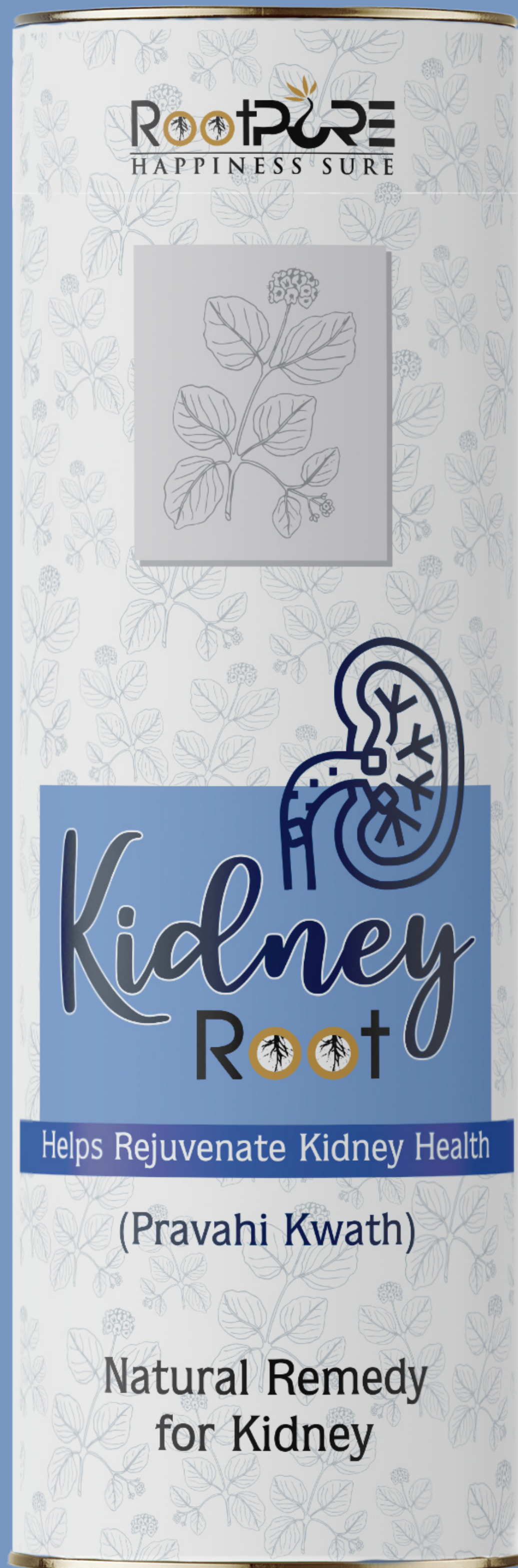


मूत्र पथ संक्रमण (यूटीआई) और सूजन – नीम: नीम के जीवाणुरोधी गुण संभावित रूप से मूत्र पथ संक्रमण को प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं, जो गुर्दे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।



समग्र किडनी स्वास्थ्य और विषहरण: – आंवला, हरीतकी, बिभीतकी: त्रिफला के रूप में संयुक्त ये तीन जड़ी-बूटियाँ एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर हैं, जो विषहरण में मदद कर सकती हैं।

सामग्री



पुनर्नवा : अपने मूत्रवर्धक गुणों के लिए जाना जाता है, पुनर्नवा शरीर से अतिरिक्त तरल पदार्थ को खत्म करने में मदद करता है।



गिलोय: इसे टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया के नाम से भी जाना जाता है, गिलोय को एक इम्यूनोमॉड्यूलैटर और एंटीऑक्सीडेंट माना जाता है।



गोखरु: गोखरु, या ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस, का उपयोग अक्सर आयुर्वेद में इसके मूत्रवर्धक और सूजन-रोधी गुणों के लिए किया जाता है।



वरुण: पारंपरिक रूप से वरुण का उपयोग इसके संभावित मूत्रवर्धक और सूजन-रोधी प्रभावों के लिए किया जाता है।



अश्वगंधा: जबकि अश्वगंधा अक्सर एडाप्टोजेनिक गुणों से जुड़ा होता है, किडनी के स्वास्थ्य पर इसके सीधे प्रभाव पर सीमित शोध है।



सामग्री



आंवला: हरीतकी और बिभीतकी, जिसे त्रिफला के नाम से जाना जाता है, में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करके किडनी के स्वास्थ्य में संभावित सहायता करते हैं।



पाषाणभेद: माना जाता है कि पाषाणभेद में मूत्रवर्धक गुण होते हैं और पारंपरिक रूप से इसका उपयोग गुर्दे की पथरी के निर्माण को रोकने में मदद के लिए किया जाता है।



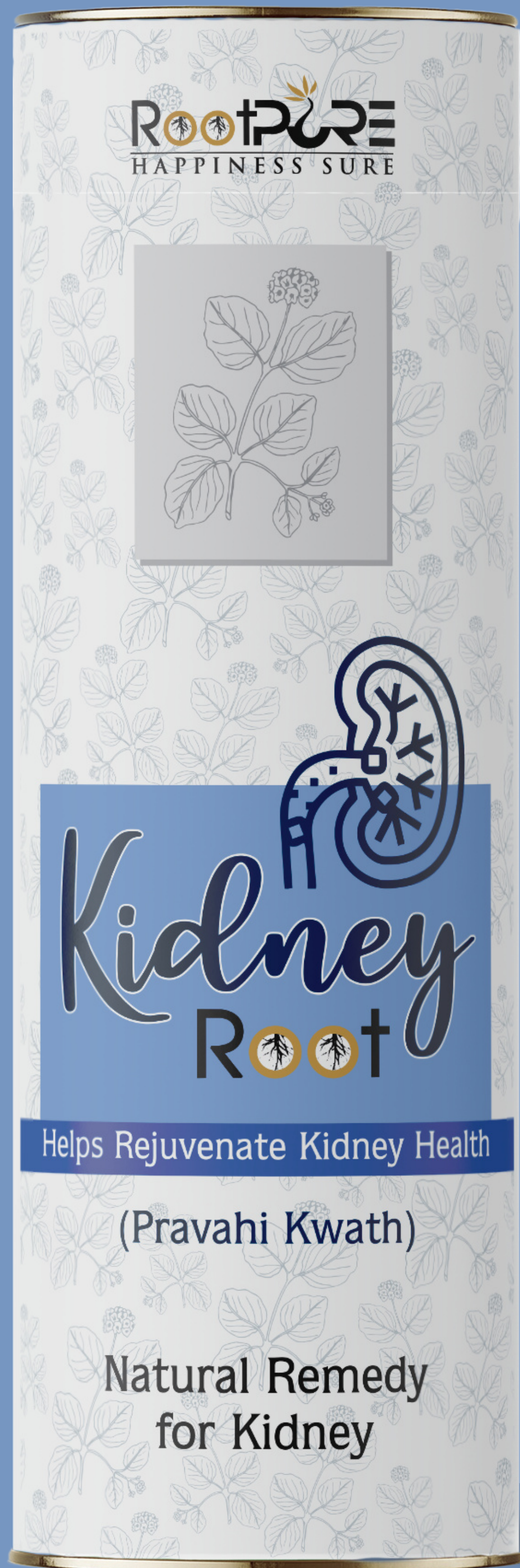
नीम: नीम को एंटीबैक्टीरियल और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों वाला माना जाता है।



व्हीटग्रास: कुछ समर्थकों का सुझाव है कि व्हीटग्रास अपने पोषक तत्वों के कारण शरीर को विषहरण करने और गुर्दे के समग्र स्वास्थ्य का समर्थन करने में मदद कर सकता है।



कुलथी: माना जाता है कि कुलथी में मूत्रवर्धक गुण होते हैं और पारंपरिक रूप से इसका उपयोग गुर्दे और मूत्र प्रणाली के कार्यों में सुधार के लिए किया जाता है।



जीएमपी प्रमाणित



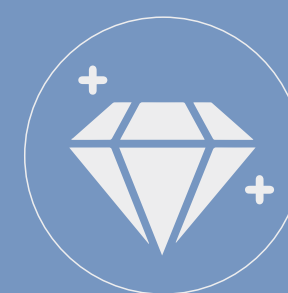
कीटो अनुकूल



ग्लूटेन मुक्त



आयुष प्रमाणित



प्रीमियम गुणवत्ता



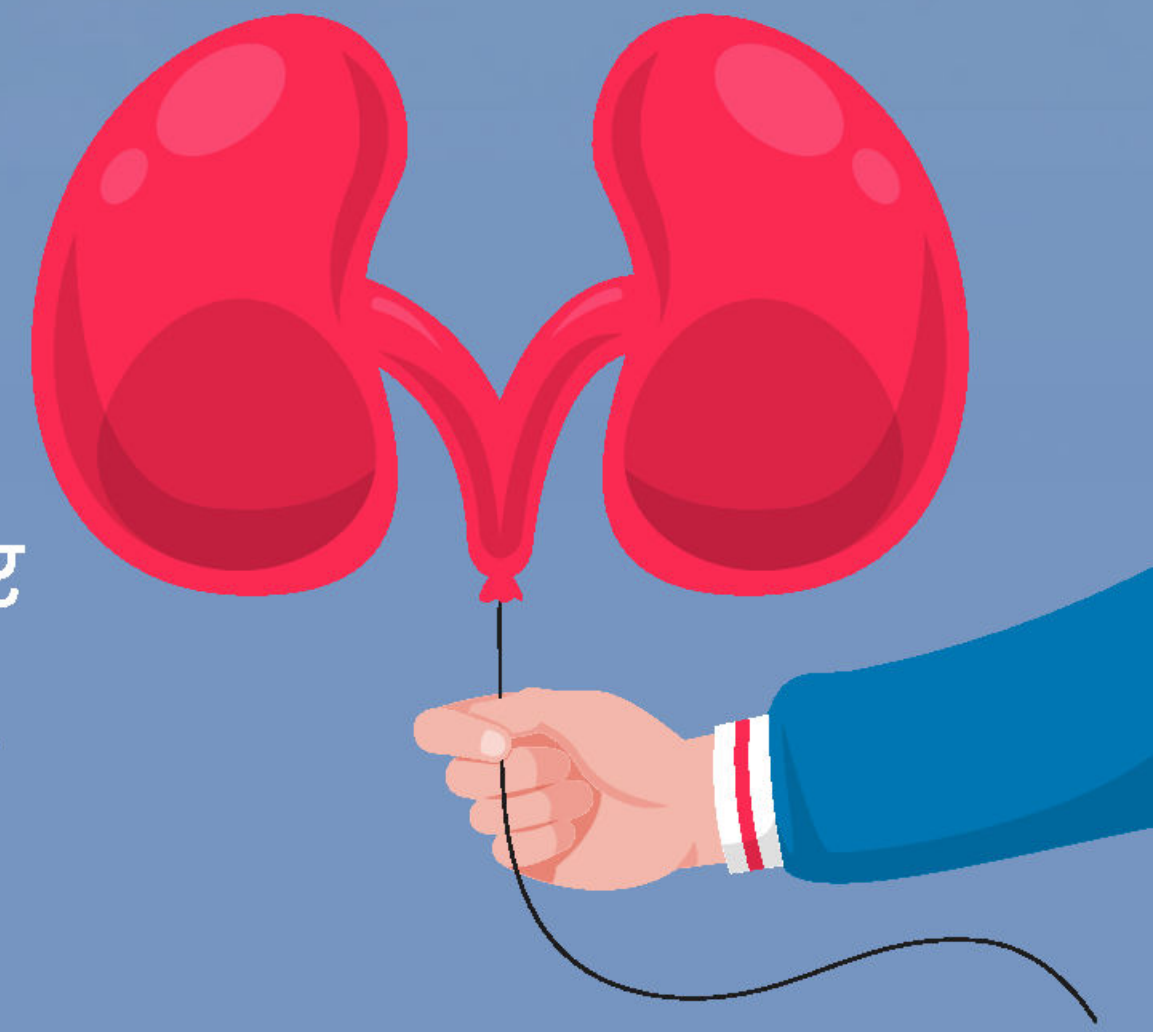
सुरक्षा के लिए लैब में परीक्षण

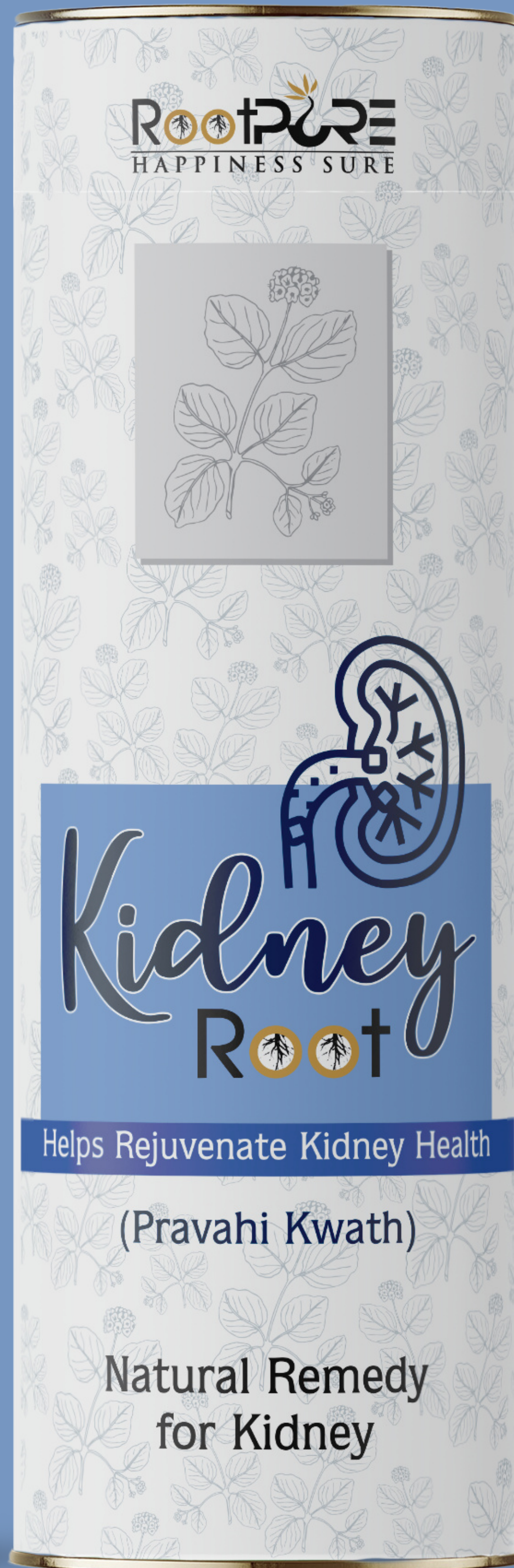


परंपरागत रूप से माना जाता है कि ये जड़ी-बूटियाँ किडनी के स्वास्थ्य के लिए विभिन्न लाभ प्रदान करती हैं: पुनर्नवा को मूत्रवर्धक के रूप में कार्य करने के लिए जाना जाता है, जो अतिरिक्त तरल पदार्थ और अपशिष्ट उत्पादों को हटाने में मदद करता है, इस प्रकार किडनी के कार्य को बढ़ावा देता है और एडिमा को कम करता है। गिलोय को एक इम्युनोमोड्यूलैटर के रूप में पहचाना जाता है जो प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं को बढ़ाता है, संभावित रूप से संक्रमण के प्रति संवेदनशीलता को कम करता है जो किडनी को प्रभावित कर सकता है।

गोखरू, जो अपने मूत्रवर्धक और सूजन-रोधी गुणों के लिए जाना जाता है, विषाक्त पदार्थों को खत्म करने और सूजन को कम करने में सहायता करता है, दोनों ही किडनी की सेहत के लिए आवश्यक हैं। वरन (क्रैटेवा नूरवाला) का उपयोग अक्सर मूत्र स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए किया जाता है और यह मूत्र विकारों के प्रबंधन में सहायता कर सकता है, संभावित रूप से गुर्दे की पथरी के गठन को रोक सकता है।

क्रैटेवा नूरवाला के सूजन-रोधी गुण गुर्दे की सूजन को कम कर सकते हैं, जिससे समग्र गुर्दे के स्वास्थ्य में मदद मिलती है। कौंच एक मूत्रवर्धक के रूप में कार्य करता है।

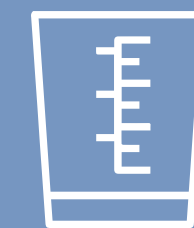




उपयोग कैसे करें ?



उपयोग से पहले बोतल
को हिलाएं।



गर्म पानी के साथ
30 मिलीलीटर जूस
पतला करें



भोजन से पहले
प्रतिदिन दो बार सेवन करें